प्रो० कामेश्वर सिंह
रोहतास महिला कॉलेज सासाराम
राजनीति विभाग, B.A I (Sub)
Date - 22-06-2021

प्रश्न:- जॉन ऑस्टिन के सम्प्रभुता संबंधी सिद्धान्तों की आलोचनात्मक व्याख्या करें।

उत्तर:→ जॉन आस्टिन का जन्म इंग्लैण्ड में 1790 ई० में हुआ था। जिन्होंने 1832 ई० में सम्प्रभुता सम्बन्धी विषय पर एक लेख लिखा। जिसका नाम है Lectures on Jurisprudence (विधान-शास्त्र पर व्याख्यान) रखा। आस्टिन हाब्स के विचारों से प्रभावित था तथा बेन्थम के विचारों का समर्थक था। वह एक न्यायवेत्ता (वकील) था। उन्होंने सम्प्रभुता के वैधानिक रूप का प्रतिपादन किया।

उसके अनुसार कानून सम्प्रभुता की देन है। कानून के संबंध में जॉन आस्टिन के विचार था कि "उच्चतर द्वारा निम्नतर को दिया गया आदेश ही कानून है।" सम्प्रभु व्यक्ति का आदेश ही कानून है। इसी विचार के आधार पर जॉन आस्टिन ने सम्प्रभुता के धारणा को प्रतिपादित किया।

बेन्थम द्वारा प्रस्तुत किया गया सम्प्रभुता सम्बन्धी सिद्धान्त केवल सकारात्मक चिन्हों को ही व्याख्या किया है। जबकि आस्टिन सकारात्मक चिन्हों को नकारात्मक चिन्हों में जोड़कर सम्प्रभुता की पूर्ण परिभाषा निकाली। उसने

उपयुक्त विचार कि सम्प्रभु अन्य किसी भी व्यक्ति की आज्ञा को नहीं मानता जिसे किसी ने नहीं बताया था।

जान ऑस्टिन ने सम्प्रभुता को निम्न परिभाषा दिया है जो इस प्रकार है।

परिभाषा :— "यदि कोई निश्चित उच्च सत्ताधारी व्यक्ति, जो स्वयं किसी उच्च सत्ताधारी की आज्ञा पालन का अभ्यस्त नहीं है, किसी समाज के अधिकांश भाग से अपने आदेशों का पालन कराता है, तो उस समाज में वह उच्च सत्ताधारी व्यक्ति प्रभुत्व शक्ति सम्पन्न होता है तथा वह समाज उस उच्चसत्ताधारी सहित एक राजनीतिक और स्वतंत्र समाज होता है।"

ऑस्टिन द्वारा सम्प्रभुता संबंधी सिद्धान्त का विश्लेषण निम्न प्रकार से होता है।

(1.) स्वतंत्र राजनीतिक समाज के लिए सम्प्रभु का होना अनिवार्य है — सम्प्रभु बिना स्वतंत्र राजनीतिक समाज में राज्य का अस्तित्व सम्भव नहीं है। जहाँ सम्प्रभु नहीं, वहाँ कानून नहीं, है जहाँ कानून नहीं है, वहाँ राज्य नहीं हो सकता। इसलिए प्रत्येक राजनीतिक समाज में सम्प्रभु उसी प्रकार अनिवार्य है जिस प्रकार किसी पदार्थ के पिंड में आकर्षण केन्द्र का होना अनिवार्य है।

Scanned with CamScanner